प्रजनन को लेकर बच्चों के सवाल

शिक्षक की दुविधा

कालू राम शर्मा

हाल ही में अपने ही साथी ने ईमेल पर वह सवाल पूछा जो चौथी कक्षा की छात्रा ने अपने शिक्षक से पूछा था। सवाल है 'बच्चा पेट में कैसे आ जाता है?' जैसा कि शिक्षक ने अपने साथी से कहा भी कि यह एक चुनौती है कि इस तरह के सवालों पर बच्चों के साथ कैसे बातचीत करें। सवाल मानव प्रजनन से जुड़ा है इसलिए इसे विमर्श में लाने से भरपूर परहेज किया जाता है। वजह? हम अपने बच्चों को इस तरह की चीजों से बचाकर रखना चाहते हैं। शायद यह एक वजह है कि बच्चे इस आड़ में अमर्यादित राह पर कदम बढ़ाने को अग्रसर होते हैं।

बेशक, सवाल दिलचस्प है। और भी दिलचस्प यह है कि एक बच्ची ने यह सवाल पूछा है जहां लड़कियों के सवाल करने में सामाजिक बंधन पहाड़ जैसे बाधक बनते हैं। इसलिए सवाल अगर किसी शिक्षक से पूछा गया है तो उस शिक्षक की यह खूबी कही जानी चाहिए कि वह अपनी कक्षाओं के बच्चों को सवाल करने का माकूल माहौल प्रदान करते हैं।

सवाल करना शिक्षा के एक प्रमुख हुनर के रूप में पहचाना गया है। बच्चे अपने आसपास की घटनाओं और प्रक्रियाओं पर सवाल करें और उनके जवाब खोजें। इससे भी बढ़कर सवाल पूछने का साहस बच्चों में आ पाए। कमोबेश यही साहस उन्हें अपने जीवन को लोकतांत्रिक तरीके से जीने के लिए अपरिहार्य है।

बहरहाल, हम मूल सवाल पर आते हैं कि आखिर उस चौथी कक्षा की छात्रा को इस सवाल का जवाब दें या न दें। दूसरी बात यह है कि अगर सवाल का जवाब देना है तो क्या जवाब देना चाहिए। किस हद तक जाना चाहिए? इन दोनों बातों पर हम विचार करेंगे।

पहली बात यह कि कोई भी बच्चा कोई भी सवाल करता है तो उसके सवाल का संज्ञान लिया जाना चाहिए। अब दूसरी बात पर आते हैं। सवाल का जवाब क्या दिया जाए?

मामला जटिलता का या टालने का

चूंकि सवाल मानव प्रजनन व यौन संबंधों की श्रेणी में आता है इसलिए जाहिर है कि हम अपने बीच इस विमर्श से बचते हैं। अक्सर शिक्षक अपनी कक्षाओं में प्रजनन की अवधारणा पर बातचीत करने से कतराते हैं। सुधि पाठकों के पास ऐसे तमाम उदाहरण होंगे जहां शिक्षक न केवल माध्यमिक कक्षाओं के स्तर पर बल्कि महाविद्यालयों के स्तर पर भी जीव शास्त्र में जब प्रजनन तंत्र के शिक्षण की बारी आती तो उसे टालने की कोशिश करते हैं या फिर अगर वे पढ़ाते भी हैं तो शिक्षक और छात्रों की नजरें जुदा ही होती हैं।

मैं अपना ही उदाहरण दे सकता हूं। जब मैं स्नातक कक्षाओं में अध्ययन कर रहा था तब मेरे शिक्षक केंचुए का प्रजनन तंत्र पढ़ाने से कतराते थे। जब वे किसी जंतु के प्रजनन तंत्र को पढ़ाते भी तो उनकी नजरें सामने बैठे हम छात्रों की नजरों से नहीं टकराती।

अक्सर हम प्रजनन के मूलभूत मामलों में बातचीत करने में कतराते हैं। बच्चियों को माहवारी के बारे में तब तक पता नहीं होता जब तक कि वे माहवारी से गुजरती नहीं। अमूमन अचानक ही इसका एक समस्या के रूप में बच्चियों को सामना करना पड़ता है जबकि एक बच्ची अमूमन 10-11-12 वर्ष की उम्र में माहवारी की प्रक्रिया से गुजरना प्रारंभ कर देती है। लेकिन उसे इस प्रक्रिया के व्यवहारिक पहलूओं के बारे में पता नहीं होता। उसे इस जैविक प्रक्रिया से सामना करने के लिए भी मानसिक तौर पर तैयार नहीं किया जाता। यह नहीं कहा जा रहा है कि उसे माहवारी का जीव विज्ञान बता दिया जाए। बल्कि उसे यह बताया जाए कि यह एक सामान्य प्रक्रिया है और इसके दौरान उसे क्या सावधानी बरतनी चाहिए।

माहवारी को लेकर अभी हम यहां अधिक बातचीत नहीं करेंगे मगर सामजिक तौर पर माहवारी को लेकर जिस प्रकार की विकृति समाज में आ चुकी है उसकी एक प्रमुख वजह विमर्श से परहेज है। इसके चलते औरत की कुदरती जैविक प्रक्रिया विकृति की शिकार हो जाती है।

बच्चों को क्या बताएं और क्या नहीं?

बच्चों को क्या बताया जाए और क्या न बताया जाए, यह कोई विवाद का विषय नहीं है। बच्चा जो भी बुनियादी तौर पर समझना चाहता है, सीखना चाहता है या पता करना चाहता है उसके लिए उसे रोकना नहीं चाहिए। यह कहकर टाल देना कि यह अभी उचित समय नहीं है, उचित नहीं है। हां, हमें किसी मामले में कितनी गहराई तक जाना है यह बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर को ध्यान में रखते हुए तय करना होगा।

चौथी कक्षा में पढ़ रही बच्ची की उम्र लगभग 9-10 (अगर एक बच्ची 5 वर्ष की उम्र में स्कूल में भर्ती होती है तो) वर्ष की होगी। एक 9-10 वर्ष की बच्ची के विविध अवलोकनों में यह जरूर शामिल होगा कि उसके आसपास की दुनिया में बच्चों ने जन्म लिया। बच्चों के घरों में मुर्गियां अंडे देती होंगी। गाय-बकरियां, कुतिया ने बच्चे भी जने होंगे। उनके अपने इस प्रकार के अवलोकनों के अनुभव जरूर होंगे।

अब मूल सवाल यही है कि उस 'क्यों' का जवाब बच्चे को दिया जाए या नहीं। यही यक्ष प्रश्न है। वास्तव में प्रजनन का पूरा मामला काफी जटिल है। यह टालने का मामला नहीं बनता। इसे शिक्षक और किसी भी वयस्क को जो बच्चों के साथ बातचीत करता है, उसे एक स्वाभाविक सवाल के रूप में लेना चाहिए। बच्चों के स्तर पर कोई भी सवाल यह जरूर मांग करता है कि उसका जवाब बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर को छूते हुए प्रस्तुत किया जाए।

जटिलता के मामले को कैसे संभाले?

तो अब आते हैं कि खासकर बच्चों को यह कैसे बताया जाए कि आखिर बच्चा पेट में कैसे आता है? इसको लेकर एक मोटी-मोटी समझ तो वयस्कों को है मगर यह समझ भी लगता है कि गलत ही है। यही वजह है कि स्त्री के गर्भधारण के बाद भी कई लोग पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए तंत्र-मंत्र के चक्कर में पड़े रहते हैं। अगर एक बार गर्भधारण हो गया तो फिर मनुष्यों में भ्रूण के लिंग निर्धारण को बदला नहीं जा सकता। (हां, कुछ सरिसर्पों जैसे कि मगर, घड़ियाल, कछुए और अंधा सांप में लिंग का निर्धारण तापमान से होता है)।

बहरहाल, इस पूरे मामले को बच्चों के साथ कैसे बातचीत में कैसे लाया जाए। इसका कोई एक रामबाण जवाब नहीं हो सकता। मामला प्रजनन की विषयवस्तु की समझ से अधिक शिक्षणशास्त्र (पेडागॉजी) का अधिक है।

जवाब एक :

एक दंपति ने अपनी बड़ी बेटी को जन्म के चार साल के बाद बताया कि उनके घर में एक और बच्चा आने वाला है। उस बच्ची को यह बताया कि तुम्हारा भाई या बहन आने वाला है। जब मां का उदर भ्रूण के विकास के साथ बढ़ता गया तो उस बच्ची को भ्रूण की हरकतों (जैसे कि हिलना-डुलना) को महसूस करवाया जाता। उस बच्ची ने आखिर पूछा कि यह बच्चा पेट में कैसे आया होगा?

मां ने बताया कि मेरे पेट में एक अंडादानी है। इस अंडादानी से बहुत ही छोटा अंडा छूटा और फिर तुम्हारे पापा ने एक बीज मेरे शरीर में डाला। इस तरह से मेरे अंडे और तुम्हारे पापा के बीज मिलकर एक बन गए। इस तरह से तुम मेरे पेट में बनी। फिर तुम्हें मैंने पूरे नौ महीने पेट में रखा। फिर मुझे अस्पताल ले गए। वहां फिर मेरे पेट से तुमको बाहर निकाला। फिर तुम्हें अच्छे से नहलाया। फिर कुछ दिनों के बाद घर ले आए। इस तरह से तुम्हारा जन्म हुआ।

जवाब दो :

एक मां से बच्चे ने पूछा कि मैं कहां से आया? मां ने बताया कि तुम मेरे पेट में नौ महीने तक रहे। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि मुझे पेट में जोर का दर्द होने लगा। फिर अस्पताल में ले गए। वहां फिर तुम्हारा जन्म हुआ। पांच वर्ष के बच्चे को उसके मनमाफिक जवाब मिल चुका था।

जवाब तीन :

आठवीं कक्षा की एक बच्ची ने अपनी शिक्षिका से सवाल पूछा कि बच्चे कैसे बनते हैं? उस शिक्षिका ने विस्तार से बताया। उल्लेखनीय है कि उस कक्षा में लड़के और लड़कियां दोनों ही अध्ययन कर रहे थे। वह बच्चों से बातचीत भी करती जा रही थी।

कोई भी जीव हो दुनिया में। चाहे वह पेड़-पौधे हों या जानवर। वह अपने वंश को आगे बढ़ाने के लिए अंडे-बच्चे जरूर पैदा करते हैं। यह दो तरीके से होता है।

पहला तरीका है, जिसमें किसी पेड़-पौधे की हम कलम काटकर जमीन में गाड़ देते हैं और उससे नया पौधा बन जाता है। यह अलैंगिक तरीका है। पेड़-पौधों में ऐसे अधिक उदाहरण दिखाई देते हैं। आपने अवलोकन किया होगा कि आलू, अदरख, गन्ने, हल्दी की फसल के लिए इनको बो देते हैं और नए पौधे फूट आते हैं।

जो पौधे बीज से बनते हैं यह लैंगिक प्रजनन है। बीज फूल से बनते हैं। यह लैंगिक प्रक्रिया है। इसमें फूल के नर भाग के परागकण मादा की वर्तिकाग्र तक पहुंचते हैं। इसमें दो लिंगों का होना अनिवार्य शर्त है।

अबकी बार शिक्षिका ने पूछा कि तुमने अपने आसपास जानवरों के बच्चे देखे होंगे? ये कैसे बनते होंगे? बच्चों के जवाब थे कि गाय, बछड़े को जनती है। एक छात्र ने बताया कि उसने गाय को बछड़ा जनते हुए उसके खेत में देखा है। बछड़े का माथा (सिर) गाय के पिसाब (पेसाब) वाले रास्ते से बाहर को निकला। फिर उसके माथे को पकड़कर एक आदमी ने खींचा। गाय परेशान हो रही थी। थोड़ी देर में बछड़ा जमीन पर गिर गया। बछड़े को खून लगा हुआ था। फिर उसके पेट से एक लंबी डोरी (रस्सी) लगी हुई थी। उसको थोडी देर बाद एक चाकू से काट दिया। फिर गाय बछड़े को चाटने लगी। एक घंटे में बछड़ा उठकर बैठ गया और खड़ा होने की कोशिश करने लगा।

एक छात्रा ने बताया कि उसके बाड़े में कुतिया ने छह पिल्लों को जना था। उसने बताया कि चूंकि कुतिया ने रात में पिल्लों को जन्म दिया इसलिए कैसे जने ये देखा नहीं जा सका।

अब शिक्षिका ने पूछा कि आखिर कैसे मां के पेट में बच्चे बनते हैं? इसको लेकर बच्चों के पास कोई जवाब नहीं था। शिक्षिका ने इस मामले में चतुराई से बातचीत की।

'देखो, ये तो हम समझते हैं कि कुत्ते में कुत्ता और कुतिया होती है। कुत्ता नर और कुतिया मादा होती है। बकरा नर और बकरी मादा होती है। ऐसे ही चूहे और चूहिया, सुअर और सुअरनी...। इनमें नर और मादा का मिलना जरूरी होता है। अंडा मादा की अंडादानी में बनता है। नर शुक्राणु मादा की बच्चेदानी (गर्भाशय) में डालता है। यहां पर मादा के अंडाणु से शुक्राणु का जुड़ाव होता है और गर्भ ठहर जाता है। इस तरह से आगे फिर यह बच्चादानी में चिपक जाता है।

इंसानों में भी ऐसा ही होता है। मां के पेट में बच्चा नौ महीने रहता है। मां की अंडादानी से अंडा छूटता है। और फिर पिताजी से शुक्राणु मां के गर्भाशय में पहुंचता है। दोनों मिलते हैं और फिर वह बच्चादानी से चिपक जाता है। फिर नौ महीने के बाद बच्चे का जन्म होता है।

शिक्षिका इस विमर्श में अपना दायरा भी निर्धारित करती जा रही थी। शिक्षिका ने बच्चों को जहां अपने अनुभव साझा करने के मौके दिए वहीं पर वह सरलता से बच्चों के जन्म की कहानी प्रस्तुत कर सकी।

जवाब चार : एक किताब से

एक किताब है 'बच्चे कैसे बनते हैं?' जिसे भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने प्रकाशित किया है। यह किताब हाउ बेबीज़ आर मेड? का हिंदी अनुवाद है जिसे अरविंद गुप्ता टॉयज गैलरी पर प्राप्त किया जा सकता है। किताब की शुरुआत इस बात से होती है कि सेक्स संबंधी इस तरह के सवाल तीन साल के होते-होते बच्चे पूछने लगते हैं। सभी बच्चे इस विषय की ओर कभी-न-कभी आकर्षित होते ही हैं और इस बारे में अधिक जानना चाहते हैं।

इस पुस्तक के पहले पन्ने और एक और अन्य पन्ने को यहां हुबहू प्रस्तुत किया जा रहा है जो एहसास कराती है कि बच्चों के साथ कितनी आसानी से मगर ईमानदारी से इस मामले में बातचीत की जा सकती है।

जब तुम्हारा जीवन शुरू हुआ, तब तुम बहुत ही छोटे थे। शायद इस पेंसिल द्वारा बनाए गए काले बिन्दु से भी छोटे।

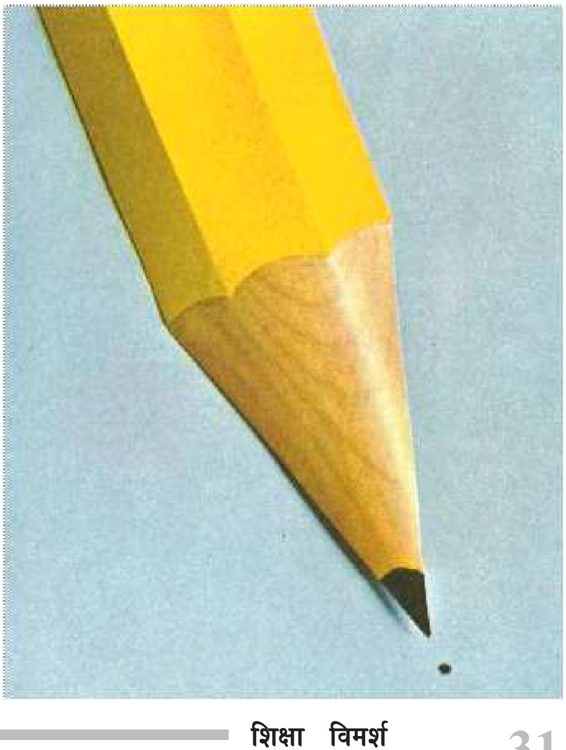

इस दुनिया में तुम जैसे बहुत से जीवों ने अपने जीवन की शुरुआत एक छोटे से अंडे से की।...

आगे और पढ़ने, इसका इस्तेमाल करने के लिए इस पुस्तक को निम्न साईट पर जाकर प्राप्त किया जा सकता है -

https://archive.org/details/BachcheKaiseBanteHain-Hindi

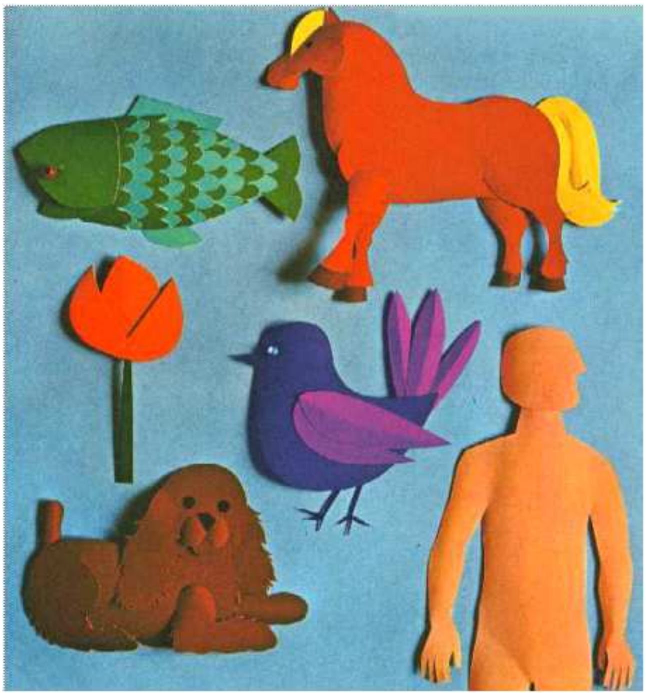

अहम क्या है?

इस तरह के सवालों में अहम? प्रजनन तंत्र की संपूर्ण जानकारी देना नहीं बल्कि विमर्श का रास्ता खोलना है।

बच्चों के सामने नेक नीयत के साथ किसी मुद्दे पर बात रख पाना जहां शिक्षक की खूबी होती है वहीं यह बच्चों का शिक्षक में विश्वास जगाता है। बिना किसी संकोच के साफगोई से इस विषय पर बातचीत हो सकती है। 'सेक्स एडूकेशन' को लेकर बच्चों के बीच बातचीत की जा सकती है।

जरूरी है शिक्षकों के साथ बातचीत

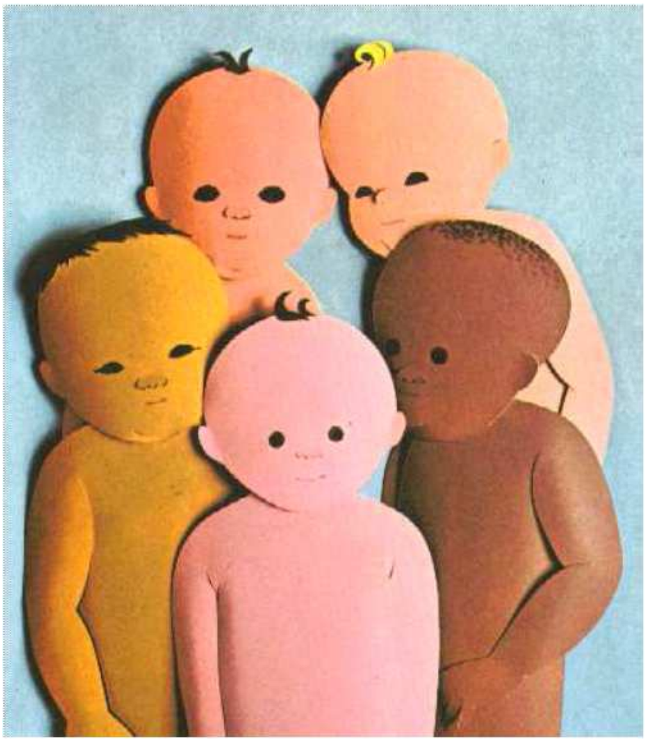

पिछले वर्षों में मैंने खरगोन जिले में (खरगोन व रायबिड़पुरा) टीएलसी पर माहवारी पर बातचीत की थी। माहवारी का मामला भी काफी संवेदनशील है। मैंने इसके जीवशास्त्रीय व सामाजिक पहलुओं पर बेबाक तरीके से अपनी बात रखी थी। इन दोनों जगहों पर महिला व पुरुष दोनों ही शिक्षक थे। मुझे लगा कि शिक्षिकाएं व शिक्षक माहवारी के जीवशास्त्रीय पहलुओं के साथ ही सामाजिक पहलुओं पर अपने विचार साझा कर रहे थे। इससे समझ में आया कि संकोच व झिझक ही इन मुद्दों पर विमर्श के आड़े आते हैं। हां, इस विमर्श में भाषायी सयंम के साथ उचित उदाहरणों को तवज्जो देना या नजरंदाज करने की चतुराई हममें होनी चाहिए।

इस तरह के नाजुक मसलों पर शिक्षकों की तैयारी अहम है। असल में इन मसलों पर बातचीत करने के लिए पाठ्यपुस्तकीय सामग्री से काम नहीं बनता। इसके लिए ऐसी सामग्री हो चाहे वह विडियो के रूप में या पठन के रूप में जो बच्चों को समझाने के लिए उपयुक्त हो। ये सभी चित्र उपरोक्त किताब से लिए गए हैं। ◆

लेखक परिचय : पिछले पच्चीस सालों से विज्ञान शिक्षण, पर्यावरण अध्ययन, शिक्षा और समाज के विषयों पर निरंतर लेखन। एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में लगभग 18 वर्ष तक संलग्न रहे। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, खरगोन (मध्यप्रदेश) में कार्यरत हैं।

संपर्क : 8226000428; **ईमेल :** kr.sharma@azimpremjifoundation.org